**ओ३म्**

**-देहरादून पुस्तक मेले के परिप्रेक्ष्य में-**

**“जीवन संवारने का श्रेष्ठ साधन ऋषियों का कालजयी साहित्य”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 मनुष्य जब जन्म लेता है तो उसके पास माता पिता के संस्कारों के साथ अपने पूर्व जन्म के कर्मों की पूंजी व संस्कार होते हैं। यह संस्कार बीज रूप में होते हैं जिन्हें संवारने के लिए खाद व पानी की आवश्यकता होती है। यह खाद और पानी मुख्यतः हमारी शिक्षा व स्वाध्याय के ऋषियों द्वारा प्रणीत ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों में हम ईश्वरीय ज्ञान वेदों से लेकर वेदांग के 6 ग्रन्थ शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, कल्प व ज्योतिष, 6 वेदोपांग योग, सांख्य, वैशेषिक, वेदान्त, मीमांसा और न्याय दर्शन तथा 11 आर्ष मान्यतानुरूप उपनिषदों ईश, कठ, केन, प्रश्न आदि को सम्मिलित कर सकते हैं। ऐसे अनेक अन्य भी बहुत से ग्रन्थ हैं परन्तु कसौटी एक है कि हम पढ़े तो सब प्रकार का साहित्य, परन्तु हमें स्वीकार केवल वेद और वेदानुकूल साहित्य को ही करना है क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से स्वतः प्रमाण है और अन्य सभी ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर ही परतः प्रमाण स्वीकार किये जाते हैं। इस कसौटी को स्वीकार कर हमें शिक्षा प्राप्ति हेतु अपना अध्ययन करना होता है। जो इस प्रकार से अध्ययन करेगा वह राम, कृष्ण, दयानन्द व उनके समान ज्ञानी, वीर, निर्भीक, साहसी, देशभक्त, मातृ-पितृ-आचार्य भक्त होगा और जो इसके विपरीत सांसारिक विषयों के ग्रन्थों को पढ़ेगा उसका सर्वांगीण विकास न हो सकेगा। हां, उनमें पूर्व संस्कारों एवं पढ़ी गई पुस्तकों के अनुरूप संस्कार व गुण तो विकसित अवश्य ही होंगे।

श्रेष्ठ साहित्य में प्रथम स्थान चार वेदों का है जिनका प्रादुर्भाव सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से हुआ था। वेदार्विभाव की पूरी प्रक्रिया ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में दी है। यह प्रक्रियां बुद्धि, ज्ञान, तर्क व विवेक के अनुरूप है। ऋषि दयानन्द जी महाभारत युद्ध के बाद वेदों के सबसे बड़े विद्वान थे ऐसा विज्ञ एवं विवेकीजन जानते व अनुभव करते हैं। वेदों की सभी शिक्षायें मनुष्य को ज्ञान व चरित्र की उच्च शिक्षा से संस्कारित व पोषित करती हैं। राम, कृष्ण व दयानन्द जी इसी शिक्षा से समाज, देश व विश्व के आदर्श पुरुष बने। इन महापुरुषों के जानने के लिए साधन रूप बाल्मीकि रामायण, महाभारत, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और ऋषि दयानन्द जी के अनेक जीवनचरित हैं। इन कुछ ग्रन्थों का ही यदि कोई मनुष्य जीवन में अध्ययन कर ले और इनमें विद्यमान सत्य आचरण को जीवन में धारण कर ले तो उसका जीवन व चरित्र उन्नत व उत्कृष्ठ हो सकते हैं। यह सभी ग्रन्थ हमारे विद्यालयों में पढ़ाये जाने चाहियें परन्तु हमारे देश की धर्मनिरपेक्षता इस काम में रूकावट डालती है। इसी कारण आज देश अपराधों की ओर बढ़ा रहा है। पश्चिमी और साम्यवादी देशों को देखे तो हमारे राष्ट्र के नेताओं व व्यवसायी जगत के लोगों का जीवन व चरित्र उन लोगों से हेय व निम्न कोटि का है। भ्रष्टाचार में भी हमारा देश भ्रष्टतम देशों में आता है। इसका एकमात्र व प्रमुख कारण हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था की न्यूनतायें हैं। अतः आवश्यकता है कि जहां देश की नई पीढ़ी सभी आधुनिक विषयों को जानें वहीं उसे वेद और प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल्यों, मान्यताओं व गुणों को जानने के साथ उसमें निहित सत्य, न्याय, पक्षपातरहित व्यवहार को अपने जीवन में धारण करना चाहिये।

प्राचीनकाल में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी जिसमें देश में श्रेष्ठ मनुष्य उत्पन्न होते थे और विश्व के लोग भी ज्ञान व चरित्र की शिक्षा लेने सभी देशों से भारत आते थे। इसमें मनुस्मृति के श्लोक भी प्रमाण हैं। कालान्तर में इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ मनुस्मृति में वाममार्गीय लोगों ने जी-भरकर प्रक्षेप किये जिससे इसका मूल स्वरूप विकृत हो गया। महर्षि दयानन्द ने हमें सत्यासत्य का विवेक करने की कसौटी दी है। इसका उपयोग कर विकृत मनुस्मृति से आर्य विद्वानांं लाला दीपचन्द आर्य, पं. राजवीर शास्त्री एवं डा. सरेन्द्र कुमार जी ने मनुस्मृति के प्रक्षेपों को दूर कर हमें शुद्ध मनुस्मृति उपलब्ध करा दी है जिसका सभी मनुष्यों को अध्ययन करना चाहिये। इसका प्रचार होने से देश में प्राचीन साहित्य की महत्ता का देशवासियों को बोध होगा और यह भी ज्ञात होगा कि हमारे प्राचीन ऋषि आज के देशी व विदेशी विद्वानों से कहीं अधिक बुद्धि व ज्ञान रखते थे। इसके लिए गुलाम व लोभी मानसिकता के पोषक नेता, अधिकारियों व विद्वानों के स्थान पर प्राचीन संस्कृति के सच्चे प्रेमियों के प्रभावशाली नेता व अधिकारी के प्रमुख पदों पर विराजमान होने की आवश्यकता है। अतः धार्मिक विद्वानों को देश की राजनीति में अधिकाधिक भाग लेना चाहिये व अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिये अन्यथा वैदिक धर्म व संस्कृति अपना उचित स्थान प्राप्त नहीं कर सकेंगी।

साहित्य विद्वानों की वह पुस्तकें व ग्रन्थ होते हैं जो मनुष्य को आध्यात्मिक व सांसारिक दोनों प्रकार का ठीक ठीक सत्य ज्ञान उपलब्ध कराये। आजकल साहित्य की एक कमी व त्रुटि यह है कि यह हमें केवल भौतिक सुख का ही ज्ञान व उसकी प्राप्ति के साधनों को प्राप्त कराता है। आध्यात्मिक साहित्य देश में विद्यमान तो है परन्तु लोग विकृत आध्यात्मिक साहित्य की ओर अधिक अग्रसर, प्रेरित व प्रभावित हैंं। इसका निराकरण होना आवश्यक है। इसके लिए यह आवश्यक हैं अध्यात्म के सभी विषयों पर परस्पर प्रीतियुक्त होकर बहस व शास्त्रार्थ अर्थात् डिबेट्स होनी चाहियें। यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिये। सभी विद्यालयों व महाविद्यालयों में होना चाहिये। सभी मत, पंथों, धर्मों व मजहबों आदि की मान्यताओं पर भी वेदों के आलोक में चर्चा व डिबेट्स होनी चाहियें। ऐसा होने पर ही सत्य ज्ञान व मान्यतायें देशवासी जनता के सामने आ सकती हैं। इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी। जो व्यक्ति इस ग्रन्थ का अध्ययन करता है उसे वेदों एवं इतर धार्मिक साहित्य सहित संसार में प्रचलित सभी मतों की मान्यताओं की ज्ञान भी हो जाता है। सत्यार्थप्रकाश में सभी मतों की मान्यताओं की समीक्षा की गई है। उस समीक्षा को पढ़कर व सभी मतों के उन अंशों को देखकर व उसका सूक्ष्मता से अध्ययन कर मनुष्य स्वमत व परमतों का विवेक व सत्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार से अध्ययन कर ही देश से अज्ञान का अन्धकार दूर होकर सत्य ज्ञान का प्रकाश हो सकता है। सद्ग्रन्थों को पढ़कर ही ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के सत्यस्वरूप व मनुष्य का ईश्वर की प्राप्ति के उद्देश्य व साधनों का ज्ञान भी अध्येता को होता है अन्यों, न पढने वालों, को नहीं। अतः इस कार्य को सम्पादित करने के लिए हमें श्रेष्ठ पुस्तकों का चयन कर उनका अध्ययन करना चाहिये जिससे हममें विवेक ज्ञान उत्पन्न होकर हम सत्य को जान सकें और सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग कर दूसरों को भी सन्मार्ग पर ला सकें।

आजकल देहरादून में 9 दिवसीय **‘देहरादून पुस्तक मेला’** लगा हुआ है। इस मेले में देश के सभी विख्यात प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता आये हुए हैं। वह जो तप व पुरुषार्थ कर रहे हैं, हम उसका अनुमान भी नहीं लगा सकते। यात्रा के कष्ट, सारा दिन स्टाल पर मेले में आये लोगों को पुस्तकों के बारे में बताना व समझाना, यत्र तत्र अपने निवास की व्यवस्था करना, स्टाल की भारी रकम अदा करना और समाप्ति पर बची पुस्तकों को बांध कर पार्सल बना कर उसे पुनः अपनी संस्था तक भिजवाना और वापसी की यात्रा करना। इन सभी कार्यों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें यह कार्य कठिन व जटिल लगता है और इस कार्य को कर रहे सभी बन्धुओं के प्रति हमें सहानुभूति उत्पन्न होती है। यह लोग हमारे लिए अच्छी अच्छी पुस्तकें लेकर आये हैं जिससे हमारा ज्ञानवर्धन हो सके। जो लोग मेले में आते हैं और सभी स्टालों पर जाकर अनेक विषयों की अच्छी अच्छी पुस्तकें खरीदते हैं वह सब बधाई के पात्र हैं। जो लोग किन्हीं कारणों से मेले में नहीं आ सक रहे हैं उनके लिए यह हानि का सौदा है। उन्हें भी मेले में आना चाहिये और अपनी सामर्थ्य के अनुसार साहित्य लेना चाहिये। जीवन में परमात्मा उन खरीदी हुई पुस्तकों को पढ़ने का समय भी अवश्य देंगे यदि आपकी भावना होगी। यदि नहीं होगी तो वह समय भी जीवन में से कट सकता है? अतः जीवनोत्थान के श्रेष्ठ साधन सद्ग्रन्थों के अध्ययन के लिए मेले में पधार पर यथेष्ठ साहित्य सभी को ले जाना चाहिये। हम भी विगत 6 दिनों से लगातर एकाधिक बार प्रतिदिन मेले में जाते हैं और अपनी आवश्यकता का साहित्य प्राप्त किया है। हम जब अपने जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि हमने जीवन में जो अध्ययन किया व विद्वानों से सदुपदेश सुने, उसके अनुरूप ही बन सके हैं। यदि हमने और अधिक अध्ययन व साधना की होती तो हमारा जीवन इससे भी अधिक अच्छा होता। यही बात सभी पर लागू होती है। सभी को इसपर विचार करना चाहिये।

मनुष्य जैसा भोजन करता है वैसा, स्वस्थ व रोगी, उसका शरीर बनता है। मनुष्य जैसा पढ़ेगा व विचारेगा वैसा ही उसका जीवन बनेगा। श्रेष्ठ विचारों व जीवन के लिए श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन आवश्यक नहीं परमावश्यक है। आईये, श्रेष्ठ साहित्य की प्राप्ति व उसके अध्ययन को जीवन में प्रमुख स्थान दें। इसी से हमारा कल्याण होगा। नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**“देहरादून पुस्तक मेले में 3 सितम्बर 2017 का सातवां दिन रविवारीय अवकाश के**

**कारण सभी पुस्तक विक्रेताओं के लिए व्यस्ततम रहा”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

देहरादून पुस्तक मेले का आज सातवां दिन था। रविवारीय अवकाश होने के कारण तथा देहरादून उत्तराखण्ड की राजधानी होने एवं यहां केन्द्रीय व राज्य सरकार के अनेक कार्यालयों के होने के कारण आज बड़ी संख्या वाले सरकारी कर्मचारियों के इस नगर में उनके अवकाश का दिन था। इस कारण आज प्रायः सभी पुस्तक प्रेमी मेले में पधारे थे। हम भी जब मेले में पहुंचें तो वहां सर्वत्र भीड़ दिखाई दी। सभी स्टालों पर पुस्तक प्रेमी युवा स्त्री व पुरुष पुस्तकें खरीदते हुए प्रतीत हुए। मुख्य द्वारा के अन्दर कुछ कुर्सियां पड़ी थीं। हमने देखा कि एक कुर्सी पर हमारे आर्यबन्धु श्री ऋषिदेव आर्य जी किसी युवक से कुछ वार्ता कर रहे थे। हमारे पहुंचने पर वह युवक चला गया और हम दोनों के बीच चर्चा आरम्भ हो गई। इसी बीच हमारे एक अन्य मित्र श्री हरजिन्दर सिंह जी पास में दिखाई दिये। वह भी हमारे समीप आ गये और हम तीनों में परस्पर लम्बा वार्तालाप हुआ। इनसे मिलकर हम गुरुकुल पौंधा के स्टाल पर गये। वहां भी दर्शक व पुस्तक प्रेमी उपस्थित थे। उनके हमने कुछ चित्र लिये और वहां से हम उसके लगभग सामने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के पुस्तक स्टाल पर गये। वहां भी दर्शकों व पुस्तक प्रेमियों की अच्छी संख्या पुस्तकों की पड़ताल कर रही थी। हमारे सामने अनेक लोगों ने अच्छी संख्या में पुस्तकें लीं।

हमने वहां देखा की अनेक व्यक्तियों में एक श्री कृष्ण कान्त वैदिक जी भी उपस्थित हैं और उन्होंने कई पुस्तकें ले रखी हैंं। श्री कृष्ण कान्त वैदिक जी आर्य विद्वान है। आपकी अथर्ववेद से जुड़े एक विषय पर पी.एच-डी का कार्य समाप्त हो गया है। आप एक उच्च पद से सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी हैं। आप वैदिक साधन आश्रम तपोवन से प्रकाशित मासिक पत्रिका **‘‘पवमान”** के सम्पादक भी हैं। स्टाल प्रभारी श्री राजेन्द्र आर्य जी ने हमें बताया कि वह पहले से ही श्री कृष्ण कान्त जी को जानते हैं। अपने सेवाकाल में श्री वैदिक जी बरेली में भी रहे और तब आर्यसमाज में यह दोनों महानुभाव परस्पर मिलते रहते थे और दोनों में निकट संबंध भी था। कल वैदिक जी का जन्म दिवस है। उन्होंने श्री राजेन्द्र जी व हमें अपने निवास पर प्रातः यज्ञ एवं प्रातःराश में आमंत्रित किया। यहीं हमें अनेक व्यक्ति पुस्तक लेते हुए मिले। किसी ने हमसे हमारे पूर्व कार्यालय का पता पूछा तो एक आकर्षक युवक श्री विवेक दीक्षित ने भी हमसे हमारे पूर्व विभाग व कार्यालय का नाम पूछा। हमारे बताने पर उन्होंने अपने पिता वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. लालजी दीक्षित जी का परिचय दिया। डा. दीक्षित जी से हमारे निकट संबंध रहे हैं। श्री विवेक आर्य यहां के एक पब्लिक स्कूल में फिजिक्स के शिक्षक हैं। इन दोनों व्यक्तियों का चित्र भी हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्टाल पर दूसरे व्यक्ति श्री प्रदीप कुमार मिश्रा जी थे जो एक इण्टर कालेज में बायोलोजी के अध्यापक हैं। आपने वहां स्वामी शंकराचार्य जी की एक पुस्तक **‘‘परा-पूजा”** की चर्चा की तो हमने बताया कि हमारे पास इस पुस्तक की दो प्रतियां हैं। मिश्रा जी ने हमसे पुस्तक की मांग की और कहा कि वह उसे प्रकाशित करना चाहते हैं क्योंकि उसमें मूर्तिपूजा का तीव्र खण्डन है। शायद यही कारण है कि गीता प्रेस, गोरखपुर इस पुस्तक का प्रकाशन नहीं करती। इसके बाद भी काफी देर तक श्री ऋषिदेव आर्य जी और हम ऋषि दयानन्द जी व अन्य आर्य महापुरुषों के जीवन पर चर्चायें करते रहे। इसी बीच रात्रि 8.15 से अधिक का समय हो गया। ऋषिदेव जी को गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ पौंधा गुरुकुल जाना था। वह उनके साथ गुरुकुल चले गये। हमने भी राजेन्द्र जी और श्री विजय ममगांई जी को अपने स्कुटर पर लेकर दोनों को उनके निवास स्थानों पर छोड़कर अपने निवास पर आ गये।

आज मेले में अधिक भीड़ होने के कारण साहित्य भी अच्छी मात्रा में बिका। अभी तक दो सौ से अधिक सत्यार्थ प्रकाश बिक चुके हैं। कल 100 सत्यार्थप्रकाश पुस्तकों का तीसरा बण्डल खोलेंगे। 50 प्रतियां का एक आर्डर भी पूरा करना है। यह भी कल ही बिक जायेगा, ऐसा अनुमान है। कुल मिलाकर आज मेले में काफी भीड़ रही और अच्छी संख्या में सभी प्रकाशकों व पुस्तक स्टालों का साहित्य बिक्री हुआ। कल सोमवार होने के कारण काय दिवस है। अतः अधिक भीड़ होने की आशा नहीं है। परसों 5 सितम्बर, 2017 को मेला समाप्त हो जायेगा। हमारे राजेन्द्र आर्य जी ने कल सायं 6.30 बजे का बरेली का रेल टिकट बुक करा रखा है। वह भी दिन में ही प्रस्थान कर जायेंगे। कल का समाचार भी हम अपने पाठकों को देने का प्रयत्न करेंगे। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**